CMYK

दूसरे चरण का मतदान

कुल सीटें 45

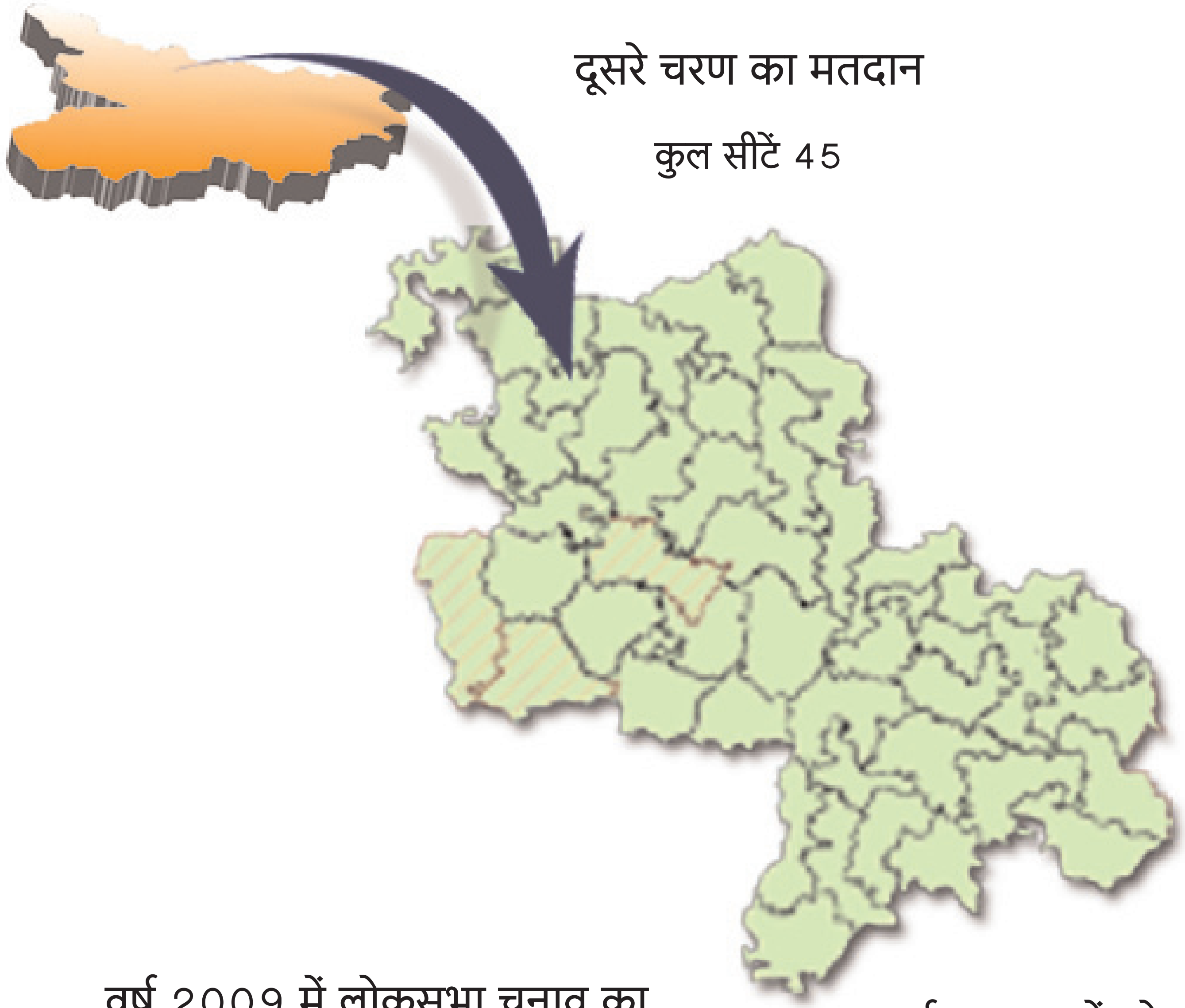

वर्ष 2009 में लोकसभा चुनाव का मतदान प्रतिशत

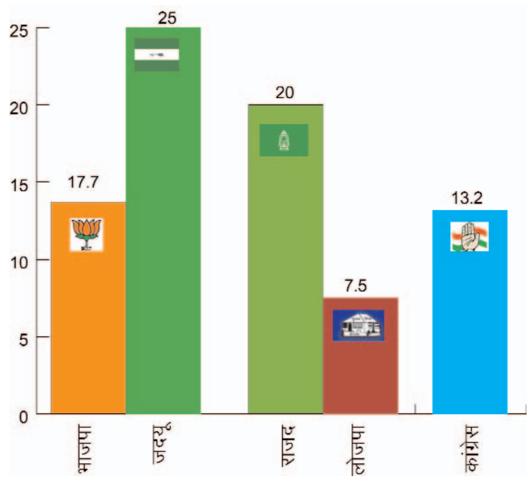

वर्ष 2009 में लोकसभा चुनाव का पार्टियों को मिली सीट

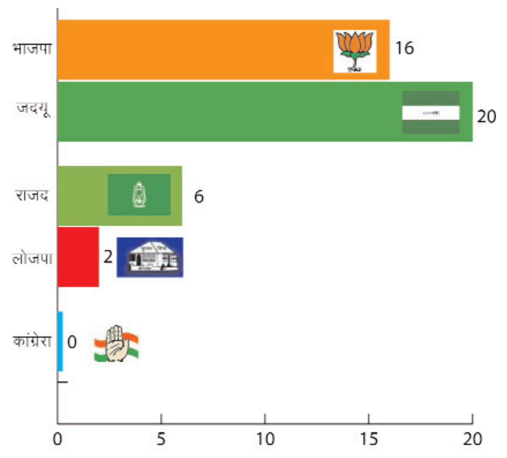

आज राजद गंठबंधन की कड़ी परीक्षा

मुसलिम और दलित मतदाताओं के बीच अपना पिछला प्रदर्शन सुधारने की होगी चुनौती

संजय कुमार

नयी दिल्ली : बिहार विधानसभा चुनाव के दूसरे चरण में आज पूर्वी चंपारण, शिवहर, सीतामढ़ी, दरभंगा, मुजफ्फरपुर और समस्तीपुर जिलों के कुल 45 क्षेत्रों में मतदान होना है. इन विधानसभा क्षेत्रों में मुसलिम और दलित दोनों वर्गों के मतदाताओं की अच्छी खासी संख्या (क्रमशः 17 और 15 फीसदी) है. यहां मुसलिम और दलित मतदाताओं की सम्मिलित संख्या कुल मतदाताओं का करीब एक तिहाई है. हालांकि दूसरे चरण का मतदान जिन इलाकों में हो रहा है उसे बिहार का मुसलिम क्षेत्र नहीं माना जाता है, फिर भी इन 45 में से 42 विधानसभा क्षेत्रों में मुसलिम मतदाता कुल मतदाताओं का दस फीसदी से अधिक हैं. केवल रोसरा, विभूतिपुर और मोहिउद्दीन नगर ऐसे क्षेत्र हैं, जहां मुसलिम मतदाता 10 फीसदी से कम हैं.

दूसरे चरण में दस विधानसभा क्षेत्र तो ऐसे हैं, जहां मुसलिम मतदाता करीब एक चौथाई (करीब 25 फीसदी) हैं. ये विधानसभा क्षेत्र हैं- ढाका, बाजपट्टी, केयोटी, जाले, परिहार, नरकटिया, दरभंगा, दरभंगा ग्रामीण, सुरसंड और अलीनगर. दूसरी ओर दलित मतदाता वैसे तो सभी विधानसभा क्षेत्रों में फैले हुए हैं, पर कुशेश्वर स्थान, बोचहा,कल्याणपुर, बहादुरपुर, सकरा, रोसरा, वारसीनगर और उजियारपुर जैसे विधानसभा क्षेत्रों में उनकी संख्या कुल मतदाताओं के पांचवें हिस्से से अधिक (20 फीसदी से अधिक) है.

पिछले विधानसभा चुनाव के नतीजों के आइने में देखें तो ऐसा लगता है कि दूसरे चरण के मतदान वाले क्षेत्रों में राष्ट्रीय जनता दल 21 अक्तूबर को संपन्न हुए पहले चरण के मतदान वाले क्षेत्रों की तुलना में थोड़ा ज्यादा मजबूत स्थिति में है. आज जिन 45 क्षेत्रों में मतदान होना है, वहां अक्तूबर 2005 के विधानसभा चुनाव में जद (यू)-भाजपा गंठबंधन को भले ही अच्छी सफलता मिली हो, राष्ट्रीय जनता दल भी 17 सीटें पाने में सफल रहा था. उस चुनाव में रामविलास पासवान की लोक जनशक्ति पार्टी को भी मुजफ्फरपुर को छोड़कर अन्य विधानसभा क्षेत्रों में काफी वोट मिल गये थे. तब लोक जनशक्ति पार्टी अकेले चुनाव लड़ रही थी. लेकिन पिछले चुनाव के बाद से स्थितियां काफी तेजी से बदली है.

विभिन्न सर्वे के नतीजे बताते हैं कि 2005 के विधानसभा चुनाव के बाद से राजद और लोजपा दोनों की लोकप्रियता में कमी आयी है. अभी पिछले साल संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में जद (यू)-भाजपा गंठबंधन इन 45 में से 36 विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त बनाने में सफल रहा था. इनमें जद (यू) 20 और भाजपा 16 क्षेत्रों में आगे रहा था. कुल डाले गये मतों के 38.7 फीसदी (जद (यू) 25 और भाजपा 13.7 फीसदी) इसी गंठबंधन के खाते में गये थे. दूसरी ओर राजद को केवल छह विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त मिली थी और कुल मतदान का करीब 20फीसदी उसके खाते में गये थे. राजद की सहयोगी लोजपा ने केवल 2 विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त बनायी थी और उसे कुल करीब 7.5 फीसदी मत मिले थे. कांग्रेस को इनमें से किसी विधानसभा क्षेत्र में बढ़त नहीं मिली थी, लेकिन उसके खाते में 13.2 फीसदी वोट पड़े थे. इस तरह दूसरे चरण के क्षेत्रों में राजद-लोजपा गंठबंधन का प्रदर्शन पहले चरण के क्षेत्रों की तुलना में भले ही बेहतर रहा हो, राज्य की सत्ताधारी जद (यू)-भाजपा गंठबंधन के प्रदर्शन से वह इतना अधिक पीछे है कि इस दूरी को पाटना राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद और लोजपा प्रमुख रामविलास पासवान के लिए आसान नहीं लगता है. यहां मुसलिम और दलित मतदाताओं की अच्छी खासी संख्या होना उनके लिए सकारात्मक पक्ष भी है, क्योंकि मुसलिम मतदाताओं के बीच राजद और दलितों के बीच लोजपा की पकड़ मानी जाती है. लेकिन इन दोनों वर्गों के व्यापक समर्थन के बिना राजद-लोजपा गंठबंधन का प्रदर्शन सुधरना मुश्किल है. राज्य में हुए विकास कार्यों के कारण मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की व्यापक लोकप्रियता दलितों के साथ-साथ सभी वर्गों के आम मतदाताओं के बीच है. ऐसे में दलित और मुसलिम मतदाताओं का पूरा समर्थन हासिल करना किसी भी अन्य गंठबंधन या दल के लिए अत्यंत कठिन है. कुल मिलाकर दूसरे चरण के कई क्षेत्रों में मुकाबला दिलचस्प होगा.